P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-1* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

संगीत मर्मज्ञ पं0 चन्द्रशेखर पन्त– परिचय एवं शास्त्रोक्त उल्लेख (विशेष संदर्भ– कल्याण के प्रकार)

सारांश

कुमाऊँ (उत्तराखण्ड) के सांस्कृतिक इतिहास में पं0 चन्द्रशेखर पन्त का नाम सदा अग्रगण्य रहेगा। कई ऐसे संगीत साधक रहे हैं जिन्होंने संगीत की साधना, अध्ययन व शोध कार्य बहुत किया, परन्तु जिनका नाम आज तक लोगों के सामने नहीं आया है। जिनका संगीत क्षेत्र को योगदान अपरिमित रहा, परन्तु ख्याति प्राप्त करने का लोभ न होने के कारण, जिनकी गणना अग्रणी, गुणीजनों में नहीं आ सकी। ऐसे ही महान संगीतज्ञ कुशल गायक, संगीत के महत्वपूर्ण शोधकर्ता, जिन्होंने संगीत के क्रियात्मक तथा शास्त्रपक्ष सम्बन्धी सिद्धान्तों से जुड़े अनेक तथ्यों पर प्रकाश डाला। ऐसे महान संगीतज्ञ, भाषाविद् स्व0 पं0 चन्द्रशेखर पन्त के जीवन परिचय तथा शास्त्रोक्त उल्लेखों को इस शोध पत्र के माध्यम से मैंने उजागर किया है।

मुख्य शब्द : शास्त्र, क्रियात्मक, ध्रुपद।

वन्दना जोशी
सहायक प्राध्यापक,
संगीत विभाग,
कुमाऊँ विश्वविद्यालय,
एस, एस, जे परिसर, अल्मोडा,
उत्तराखण्ड, भारत

प्रस्तावना

बीसवीं शताब्दी में पं0 विष्णु नारायण भातखण्डे, पं0 कृष्ण नारायण रातांजनकर तथा आचार्य कैलाश चन्द्र देव के बाद उत्तरी भारतीय संगीत शास्त्र के क्षितिज पर पं0 चन्द्रशेखर पन्त का नाम, एक देदीप्यमान तारे के रूप में उभर कर आया है, जो अनेक वर्षों तक न केवल स्वयं जगमगाता रहा, अपितु अपने प्रकाश से दूसरों को भी प्रकाशवान करता रहा। वस्तुतः वे इस देश के संगीत शास्त्र एवं संगीत–शोध का पर्याय बन गये थे। आपका संगीत शास्त्र पक्ष तथा क्रियात्मक पक्ष अत्यन्त सुदृढ़ था। जो असाधारण प्रतिभायुक्त संगीतज्ञ व शास्त्रज्ञ पं0 चन्द्रशेखर पन्त जी के बहुआयामी व्यक्तित्व की झलक मात्र है।

शोध समस्या

पं0 चन्द्रशेखर पन्त जी व्यक्तिगत एवं कृतित्व को आगामी पीढ़ियों के लाभ हेतु, शोध कार्य विकास हेतु जन सामान्य तक प्रस्तुत करना।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र में पं0 चन्द्रशेखर पन्त जी की संगीत प्रतिभा एवं संगीत मर्मज्ञता का सूक्ष्म मूल्यांकन किया गया है तथा उनके शास्त्रोक्त उल्लेख को प्रकाश में लाने का प्रयास किया गया है जिससे संगीत के शोधार्थियों को एक नवीन दिशा प्राप्ति हो सकेगी। उनका संगीत योगदान वर्तमान में संगीत प्रेमियों के लिए ज्ञानवर्द्धक प्रेरणा स्रोत बन सकता है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र की प्रविधि वर्णनात्मक है।

शोध रूपरेखा

विभिन्न स्रोतों के द्वारा प्राप्त सामग्री, लेख, निबन्ध द्वारा शोध कार्य को प्रमाणिक बनाने का प्रयास किया गया है।

शोध पत्र

संगीत मनुष्य के लिये सर्वथा प्रेरणा स्रोत रहा है। प्राचीन समय से ही सभ्यता और संस्कृति के विभिन्न चरणों की लम्बी यात्रा, संगीत के माध्यम से पूरी तरह कायम रही तथा समय के साथ–साथ इसमें परिवर्तन तथा उपयोगी विस्तार भी हुए। आरम्भिक चरणों में संगीत वैदिक ऋचाओं के पाठ्य तक ही सीमित और भक्ति प्रधान था। समय की आवश्यकतानुसार संगीत का स्वरूप बदलता रहा।

भारतीय संगीत की यदि हम चर्चा करें, तो इसके इतिहास पर साधिकार प्रकाश डालना एक दुष्कर प्रयास है, किन्तु शास्त्रीय संगीत में मर्मज्ञों

तथा गुणीजनों से ज्ञात होता है, कि यहाँ संगीत की लम्बी परम्परा रही है और शास्त्रीय संगीत के जानकारों के साथ उन गुणीजनों की संख्या भी काफी है जो शास्त्र से लोक की ओर मुड़े हैं या नयी ही परम्परा को स्थापित करने में सफल रहे हैं।[1]

भारतीय संगीत के महान धरोहर, शास्त्रीय संगीत कला के मूल्यों को समझकर, सहेजकर रखने तथा उसमें संशोधन करके सामान्य वर्ग तक पहुँचाने का अथक प्रयास संगीत मर्मज्ञ, संगीताचार्य, पं0 चन्द्रशेखर पन्त जी ने किया है। संगीत के सैद्धान्तिक पक्ष में दक्ष पं0 चन्द्रशेखर पन्त संगीत के क्रियात्मक पक्ष में भी दक्ष थे। वे मूल रूप से उत्तराखण्ड के कुमाऊँ क्षेत्र से जुड़े हुए विशिष्ट संगीतज्ञ थे।

पं0 चन्द्रशेखर पन्त का जन्म 22 नवम्बर 1912 में हुआ था। जन्म के विषय में अनेक भ्रान्तियाँ हैं। कुछ मतानुसार उनका जन्म स्थल अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड) बताया गया है तथा कुछ मतानुसार उनकी जन्म स्थली उ0प्र0 बाराबंकी जिले के सूरजपुर मानी जाती है। आपके परदादा स्व0 देवी दत्त पन्त तथा दादा स्व0 जयशंकर पन्त थे। आपके पिता स्व0 नरोत्तम पन्त तथा माता श्रीमती श्यामा पन्त थीं। आपके चचेरे भाई स्व0 जयदत्त पन्त, हरीश पन्त, अश्विनी पन्त तथा ललित पन्त थे तथा आपके भतीजे श्री योगेश पन्त, उपेन्द्र पन्त व तारा पन्त थे।

आपके मामा पं0 सत्यानन्द जोशी के यहाँ ही रहकर पं0 चन्द्रशेखर पन्त ने संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की। संस्कृताचार्य प्रो0 हेमचन्द्र जोशी आपके ममेरे भाई थे। आपका पारिवारिक वातावरण पूर्णतः संगीतमय था। बाल्यकाल से ही आपकी रूचि संगीत के प्रति थी। मात्र पाँच वर्ष की आयु में आपने महात्मा गाँधी के सम्मुख 'मेरे तो गिरधर गोपाल', मीराबाई का भजन प्रस्तुत किया। मात्र बारह वर्ष की आयु में 1925 में पं0 विष्णु भातखंडे द्वारा लखनऊ में आयोजित "अखिल भारतीय सम्मेलन" में अपनी रागबद्ध, सुन्दर प्रस्तुति से सबको मंत्रमुग्ध कर दिया तथा अनेक स्वर्ण पदक प्राप्त करके, इस सम्मेलन में स्वर तथा लय का अद्भुत चमत्कार दिखाया। तत्पश्चात् वे अपने मामा श्री सत्यानन्द जोशी के साथ इलाहाबाद चले गये तथा उन्हीं की छत्रछाया में संगीत का अध्ययन एवं अभ्यास करने लगे। इलाहाबाद आकर आपने पं0 बी.ए. कशालकर से विधिवत् संगीत की शिक्षा प्राप्त की। पं0 कशालकर जी से आपने रागों की बारीकियाँ, सिद्धान्तों एवं स्वर–प्रयोगों आदि का विधिवत ज्ञान प्राप्त किया। पं0 कशालकर प्राचीन संगीत प्रणाली एवं सिद्धान्तों के भी प्रबुद्ध ज्ञाता थे। इसके पश्चात् पं0 पन्त जी ने प्रकाण्ड ध्रुपद गायक पं0 हरिनारायण मुखोपध्याय से ध्रुपद व धमार की गम्भीर गायन शैलियों को आत्मसात् किया। पं0 हरिनारायण प्रतिभाशाली ध्रुपद गायक, रचनाकार व शास्त्रकार थे तथा आपके ध्रुपद गायन में 'खंडारवाणी' से समानता रखने वाली विशेषताओं का समावेश था। पं0 चन्द्रशेखर पन्त ने इतने प्रतिष्ठित और सम्मानित कलाकार के सानिध्य में रहकर जटिल से जटिल ध्रुपद गायन शैली से आत्मसात् किया।

कुछ वर्ष इलाहाबाद और बनारस रहने के उपरान्त (लगभग सन् 1932–33 में) पं0 सत्यानन्द जोशी के साथ पं0 चन्द्रशेखर पन्त लखनऊ आ गये तथा पं0 भातखण्डे जी के शिष्य पदम भूषण पं0 श्रीकृष्ण नारायण रातांजनकर जी के देखरेख में कई वर्षों तक हिन्दुस्तानी संगीत की शिक्षा लेते रहे तथा पं0 रातांजनकर की घरानेदार गायन शैली को आत्मसात् किया। आपने अपने गुरू पं0 रातांजनकर जी से ख्याल एवं तरानों की गायकी को विधिवत सीखा। सन् 1935 में आपने "मैरिस म्यूजियम कालेज" 'संगीत' विशारद' उर्त्तीण किया, जिसमें आपको "भातखण्डे स्वर्ण पदक" प्रदान किया गया।

शिव स्तुति, हनुमंत वंदना, विष्णुगत, गणपति पूजन गीत, सरस्वती वंदना, शक्ति उपासना सम्बन्धित बंदिश को विविध रागों में गाने की आप अपूर्ण क्षमता रखते थे। पं0 हरिनारायण मुखोपाध्याय एवं पं0 श्रीकृष्ण नारायण रातांजनकर जैसे विद्वत संगीतज्ञों के सम्पर्क में पं0 चन्द्रशेखर पन्त को बहुत गुण प्राप्त हुए, जिसको उन्होंने अपनी गायकी में आत्मसात् किया। पं0 मुखोपाध्याय की प्रौढ़ गायकी पं0 चन्द्रशेखर जी के लिए वरदान सिद्ध हुई। सन् 1935 में ही संगीत विशारद के साथ–साथ ही आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत विषय से एम.ए. की उपाधि प्रथम श्रेणी में उर्त्तीण की। पं0 चन्द्रशेखर पन्त को लखनऊ विश्वविद्यालय के रिसर्च फैलो के रूप में चार वर्षों तक संगीत विषयक संस्कृत–साहित्य पर शोध कार्य करने हेतु चुना गया। आपने हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत–साहित्य के क्षेत्र में सन् 1936–37 में से 1941–42 तक पूना, बड़ौदा तथा बम्बई में रिसर्च फैलो के रूप में प्राचीन तथा मध्यकालीन ग्रंथों तथा पाण्डुलिपियों का अध्ययन व विश्लेषण करते हुए, वर्तमान सांगीतिक परम्पराओं से उनका तुलनात्मक अध्ययन किया। रिसर्च फैलो के रूप में आपका शोध कार्य– "म्यूजिकल रैफ्रेंसिस इन संस्कृत वर्क्स" नामक शीर्षक था।

पं0 चन्द्रशेखर अपनी शिक्षा पूर्ण करने के उपरान्त संगीत सम्बन्धी अनुसंधान हेतु व संस्कृत ग्रंथों के अध्ययन के लिए "भंडारकर संस्कृत संस्थान पूणे" आ गये। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने ठीक ही कहा है– "अपने को खोकर ही अपने को पाया जा सकता है।" स्वरों के उतार–चढ़ाव, आलाप, बोलतानों, में वे सभी सुध खो बैठते थे। ऐसे प्रतिभाशाली गायक थे पं0 चन्द्रशेखर पन्त।[2]

आपके "चन्द्रशेखर प्रणीत" नामक संस्कृत भाषा की पद रचना करके अपने गुरू रातांजनकर जी को भावभीनी श्रद्धांजली दी है। अनुसंधान कार्य पूरा करने के पश्चात् एकाएक आप भौतिक जीवन से विरक्त हो गये थे। अनेकों बार उन्होंने कैलाश मानसरोवर यात्रा भी की। सन् 1943–44 के लगभग आपने सन्यास ग्रहण कर लिया था। आपकी साधना स्थली अल्मोड़ा जिले के दूनागिरी के 'किमकुट' नामक स्थान पर थी। आप वहाँ अपनी कुटिया मं सन्यासी जीवन व्यतीत करते थे। आप 'बाबा हरिदास' के नाम से जाने जाते थे। आपकी कुटिया का नाम 'उत्तर साकेत' था। इन दिनों आप गम्भीर स्वाध्याय, चिंतन तथा भजन–कीर्तन में ही लीन रहा करते थे। लगभग बाहर वर्षों तक साधु जीवन व्यतीत करने के उपरान्त वे एकाएक पुनः सांसारिक जीवन में लौट आये तथा सन् 1954 में आप नैनीताल आ गये तथा 'शारदा संघ' नैनीताल में विभिन्न संगीत–गोष्ठियों एवं संगीत–सम्मेलन, कार्यक्रमों में

भाग लेने लगे और अपने अद्भुत गायन से सभी को मंत्रमुग्ध करने लगे। सन् 1964 में आपने "ईस्ट वैस्ट म्यूजिक एनकाउंटर" में भाग लिया, जहाँ प्रसिद्ध वायलिन वादक 'यहूदी मेनुहन' व अमरीका के 'निकोलस नौवोकोव' ने आपकी भारी प्रशंसा की।

सन् 1955 में आपने आकाशवाणी दिल्ली में प्रोड्यूसर के पद पर कार्य किया। आकाशवाणी दिल्ली से आपके संस्कृत भाषा के अनेक नाटकों का प्रसारण हुआ। कुछ वर्ष आकाशवाणी में कार्य करने के उपरान्त पं0 चन्द्रशेखर पन्त दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रवक्ता पद पर नियुक्त हो गये। सन् 1965 में आप दिल्ली विश्वविद्यालय में रीडर हो गये थे। जीवन के अंतिम समय में आप दिल्ली ही रहे। आपका देहावसान 20 अप्रैल सन् 1967 में हुआ था।

स्व0 पं0 चन्द्रशेखर पन्त बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। पं0 चन्द्रशेखर पन्त के जीवनवृत्त से सम्बन्धित कुछ विचारणीय बिन्दु :–

1. पं0 चन्द्रशेखर का सम्बन्ध मात्र संगीत गायन से ही था। आप केवल बांये हाथ से हारमोनियम बजाते थे। इसका कारण यह था कि आपका दायां हाथ बाल्यकाल से ही बीमारीग्रस्त होने के कारण, अविकसित एवं टेढ़ा था। परन्तु स्वाभिमानी होने के कारण वे कभी भी पूर्ण रूप से किसी पर निर्भर नहीं रहते थे।
2. कुमाऊँ क्षेत्र में आप 'चन्दा' के नाम से प्रसिद्ध थे।
3. पं0 हरिनारायण मुखोपाध्याय से ध्रुपद गायन सीखने के कारण आपके गायन में 'खंडारवाणी' से समानता रखने वाली विशेषताओं का समावेश था।
4. पं0 चन्द्रशेखर पन्त जी भजनों को शुद्ध शास्त्रीय आधार पर व समयानुसार शास्त्रोक्त रूप में गाते थे जो कि त्रिताल, झपताल, रूपक व कहरवा ताल में अधिकांश निबद्ध होते थै तथा 'राग केदार', आसा, बसन्त, देश भैरव, हमीर, पूर्वी, खंभावती, चांदनी केदारा, बिलावल, भैरवी, पीलू पहाड़ी, आसावारी, सोरठ, मांड, बसन्त मुखारी, सूर मल्हार, कौशिया, तिलंग, काफी आदि अनेक रागों पर स्वरबद्ध आपके अनेक भजन एवं अन्य बंदिशें लोकप्रिय हुए हैं। संस्कृत सूक्ति–उक्तियां, सोरठा, दोहा, चौपाई व मंत्रों का सस्वर उच्चारण आपकी गायन की विशिष्टता थी। संस्कृत पदों विशेषकर 'गीत गोविन्द' का गायन आप बहुधा किया करत थे।
5. संगीत सम्राट तानसेन समारोह ग्वालियर का उद्घाटन सत्र पं. चन्द्रशेखर पन्त के गायन से प्रारम्भ हुआ था। उस कार्यक्रम के विशेष ध्रुपद गायन की समीक्षा अनेक राष्ट्रीय समाचार पत्रों में प्रकाशित हुई थी।
6. सबसे विलक्षण बात यह है कि 'विनय पत्रिका' (संत तुलसीदास कृत) के साहित्यिक दृष्टि से उत्कृष्ट भजनों की अनेक विशिष्ट राग–रागनियों में बाँधकर गाना आपके गायन–चमत्कारिता थी। 1952 में 'हरि कीर्तिन संगीत संस्था' की स्थापना पं0 चन्द्रशेखर जी के द्वारा हुई।
7. आपका धार्मिक नाटकों में भी योगदान था। यथा– उत्तराखण्ड की रामलील व पारसी थियेटर के अन्तर्गत महाभारत नाटक, जो उस समय शारदा संघ नैनीताल द्वारा रामलीला के बाद प्रस्तुत किये जाते थे।
8. पं0 चन्द्रशेखर पन्त ने विशिष्ट शोध पत्र एवं लेख प्रस्तुत किये जो कि निम्नवत् हैं।
   i. कल्याण के प्रकार– एक ऐतिहासिक सिंहावलोकन।
   ii. लोचनकृत राग तरंगिणी
   iii. हिन्दुस्तान संगीत में स्वर एवं थाटों की उत्पत्ति
   iv. उत्तर भारतीय संगीत के प्रमुख ध्रुपद रचियता
   v. कान्हड़ा के प्रकार एक ऐतिहासिक सिंहावलोकन
   vi. काफी के प्रकार
   vii. गमक के प्रकार
   viii. Literary Express fo 'Thumri'
   ix. Life and work of 'BHATKHANDE'
   x. Khayal Compositions from the point of view of poetry.
   xi. Hidnustani music & the Tansen Tradition.
   xii. बिलावल के प्रकार

   प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि संस्कृत पदों का प्रयोग प्राचीन संगीत में पर्याप्त रूप से प्रचार में था।
9. पं0 चन्द्रशेखर पन्त के द्वारा रचित कुछ ऐसे तराने भी प्राप्त हुए हैं जिनमें संस्कृत के पद भी हैं। पदाश्रिता गीतियों में काव्य के शब्दों का लय प्रयोग के साथ विधान किया जाता था। यथा 'मागधी गीति' का उदाहरण है 'देवं रूद्रं वंदे'।[3]
10. चन्द्रशेखर पन्त के नाम से कुमाऊँ की अधिसंख्य जनता परिचित है। परन्तु लोक संगीत के प्रति पंतजी के विचारों से बहुत कम लोग अवगत हैं। कुमाऊँ में महिलाओं के मंगल गीत ओर प्रातः सांध्यकालीन भजन गीत की विशिष्टता को देखते हुए उन्होंने एक पुस्तक प्रकाशन का विचार भी किया था।[4]
11. पं0 चन्द्रशेखर पंत वेदों, उपनिषदों के महान ज्ञाता थे। वे गीता का दैनिक पाठ भी किया करते थे। आपने गीता के श्लोकों का भिन्न–भिन्न रागों पर स्वरांकन भी किया था। आपका संगीत शोधपरक कार्य अधिकांशतः अंग्रेजी व संस्कृत पर था। संगीत के मध्यकालीन ग्रंथों पर आपने वर्षों तक शोध किया तथा नवीन तथ्यों को उजागर किया। सामवेद में स्वरों की दूरी और उसकी ऊँचाई–निचाई की स्थिति का निर्धारण तथा सामवेद के स्वरों को ठीक से जानने के लिए पं0 चन्द्रशेखर ने इस विषय में खोजबीन करते हुए कहा है कि सामवेद के स्वरों को ठीक से जानने के लिए उन्होंने वर्तमान समय के घरानेदार सामवेदियों के सामगानों को एकत्र करने का प्रयास किया है। (उपरोक्त चन्द्रशेखर पन्त के लेख– "हिन्दुस्तानी संगीत में स्वर एवं घाटों की उत्पत्ति से उद्धृत है)

12. आपकी ध्रुपद गायकी खंडारवाणी की विशेषताओं से मिलती–जुलती दिखती है।

शास्त्रोक्त उल्लेख : (कल्याण के प्रकार)

(यह उल्लेख सन् 1961 में पं0 चन्द्रशेखर पंत द्वारा 'विष्णु दिगम्बर जयन्ती समारोह' में स्वलिखित निबन्ध 'कल्याण के प्रकार' पढ़ा गया था से उद्घृत है।) उक्त के संदर्भ में यह बताना आवश्यक प्रतीत होता है कि संगीत मर्मज्ञ पं0 चन्द्रशेखर पन्त को कल्याण थाट के रागों में विशेष रूचि थी। कल्याण थाट के रागों की सूक्ष्मतम बारीकियों से वे लिखते, समझाते एवं गाकर उनका स्वरूप दर्शाते थे। इसी संदर्भ में "कल्याण के प्रकार–एक ऐतिहासिक सिंहावलोकन" नामक शोध लेख का उल्लेख प्रांसागिक है। सभी जानते हैं कि 'सा रे ग मं प ध नि' 'कल्याण मेल' वाचक स्वर हैं। इसके अन्तर्गत हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति में निम्नलिखित राग हैं–

(1) यमन (2) यमन कल्याण (3) हमीर (4) भूपाली (5) कामोर (6) छायानट (7) हिन्डोल (8) गौड़ सारंग (9) केदार (10) चन्द्रकान्त (11) शुद्ध कल्याण (12) जैत कल्याण (13) श्याम कल्याण (14) सावनी कल्याण

पं0 चन्द्रशेखर पन्त के अनुसार कल्याण अंग वाले उपरोक्त चौदह रागों में 'कल्याण' की 'संयुक्त संज्ञा' केवल यमन कल्याण तथा अंतिम चारों अर्थात् शुद्ध कल्याण, जैत कल्याण, श्याम कल्याण, सावनी कल्याण के साथ ही लगी है। अन्य रागों में 'कल्याण' शब्द नहीं जुड़ा है।

इनके अतिरिक्त हेम कल्याण, पूरिया कल्याण एवं गोरख कल्याण आदि कल्याण की संज्ञा रखने वाले रागों में जिनमें कल्याण जुड़ा है, फिर भी 'कल्याण थाट' के अन्तर्गत उनका वर्गीकरण नहीं किया गया है।

यद्यपि आज हमीर, कामोद आदि के साथ कल्याण संज्ञा नहीं जोड़ते हैं फिर भी ढाई सौ वर्ष पूर्व भावभट्ट ने अपने 'अनुप रत्नाकर' में कल्याण के तेरह भेदों के अन्तर्गत इनको भी नामाांकित किया है। अर्थात् 13 भेदों द्वारा 'कल्याण' को स्पष्ट रूप से नामांकित किया है।

शुद्ध कल्यालग रागश्च ततः कल्याण नाटकः
हमीर पूर्व कल्याणः पूर्य्या भूपाली पूर्वकः।।
जयश्री पूर्व कल्याणः क्षेम कल्याणकः स्मृतः
कामोदिक कल्याणः खेम कल्याणकः स्मृतः।।
ऐमनादिक कल्याणश्चा हेर्यादिस्ततः परम
ततस्तिलक कामोदः कल्याणस्ते त्रयोदश।।

स्व0 भातखण्डे जी ने 'लक्ष्य संगीत' के प्रथम संस्करण में यमनी विलावल को भी कल्याण थाट में रखा था। बाद में ग्रंथों में उसे विलावल थाट में माना है। पं0 शारंगदेव कृत 'संगीत रत्नाकर' में कहीं भी 'कल्याण, कल्याणी या यमन' का नाम भी है, जो कि संस्कृत व संगीत के प्रकाण पण्डित थे।

वर्तमान शताब्दी के प्रारम्भ में पं0 सुदर्शनाचार्य जी ईमन, यमन कल्याण और शुद्ध कल्याण वही नादात्मक रूप देते हैं जो आजकल प्रचलित हैं। शूद्ध कल्याण विषय में आपका कहना है इसमें 'म' तथा 'नि' अल्प है और मींड के साथ लगते हैं। यह प्रकार तानसेन के पुत्र वंशजों में विशेष प्रचलित था। उनका कहना था कि पूरिया राग को ध्रुपद गायक चढ़ी हुई रिषभ से गाते हैं तथा 'कोमल' रिषभ ख्याल गायन अर्थात 'ख्यालिये' ही लगाते हैं।

पं0 चन्द्रशेखर के अनुसार सुदर्शनाचार्य ने जिस तरह से वर्णन किया है, उससे यह बात सामने आती है कि चढ़े हुए रिषभ को प्रयुक्त करने से ध्रुपद अंग से गाया गया 'राग पूरिया' 'आधुनिक कल्याण थाट' के प्रकारों का मुख्य अंग बन जाता है। उन्होंने 'इमन' को सीधी 'रागिनी' कहा है।[5]

सत्रहवीं शताब्दी में लोचन कृत 'राग तरंगिणी' में भी कल्याण मेल की पुष्टि के प्रमाण प्राप्त होते हैं। लोचन के अनुसार वीणा से वीणा में रागों के निकालने के लिए 12 प्राचीन संस्थितियां प्रचलन में थी। 'संस्थिति या संस्थान' मेल अथवा थाट के पर्यायवाची है। इनमें से एक 'ईमन' का भी संस्थान या 'मेल' है। ईमन संस्थान का इस ग्रंथ के अनुसार आधुनिक रूप ही निकलता है।–

वीणायां सर्व रागाणां स्वाणां संस्थितितस्तुया,
तस्या वादन मात्रेन स्वर व्यक्तिः प्रजायते।
तास्तु संस्थितयः प्राच्यो राणायां द्वादश स्मृताः,
या भी रागा प्रगीयन्ते प्राचीन राग पारगैः।।

(लोचनकृत– 'राग तरंगिणी' जिसका पूर्ण संस्करण दरभंगा एज से प्रकाशित हुआ है तथा आंशिक संस्करण पं0 भातखण्डे जी के द्वारा सन् 1919 में पूना में दत्तात्रेय केशव जोशी द्वारा संपादित एवं श्री भाल चन्द्र शर्मा द्वारा प्रकाशित हुआ है।)

पं0 चन्द्रशेखर पन्त के अनुसार व्यंकेटमुखी द्वारा रचित चर्तुदण्डिप्रकाशिका' में (सन् 1620–1640 के मध्य) 19 मेलों में अन्तिम मेल का नाम 'कल्याणी मेल' है। इसे दक्षिण में भी सामान्य मान्यता मिली है। व्यंकेटमुखी का 'शान्त कल्याणी' मेल आधुनिक 'कल्याण मेल' के सदृश्य है।

पं0 चन्द्रशेखर पन्त ने उत्तर तथा दक्षिण दोनों पद्धतियों में सकारात्मक रूपरेखा की दृष्टि से समान कहा है। सोमनाथ के 'रागविबोध' में (1607 ई0) 23 मुख्य मेलों के अर्न्तगत रागों का वर्णन है। उनमें से 'कल्याण मेल' भी हैं किन्तु सोमनाथ के कल्याण मेल में दो स्वर आज वर्तमान से भिन्न हैं– गन्धार और धैवत। पं0 चन्द्रशेखर जी के अनुसार इससे पूर्व का ग्रंथ 'स्वरमेल कलानिधि' रामामात्य द्वारा रचित है। इसमें कल्याण मेल का कहीं वर्णन नहीं किया गया है।[6]

पं0 चन्द्रशेखर पंत के विचारानुसार– दक्षिण की मेल पद्धति प्रवर्तक 'विद्यारण्यं के 'संगीत सार' में 50 प्रसिद्ध रागों का तथा 15 मेलों का वर्णन किया है, किन्तु इनमें कल्याण नामक मेल का नाम नहीं है। उत्तर के पुण्डरीक विट्ठल कृत 'सद्रागचन्द्रोदय' में 19 मेलों के अन्तर्गत रागों का वर्गीकरण है। इनमें सत्ररहवां 'कल्याण मेल' है। इसके स्वर सोमनाथ वर्णित स्वरों के समान है, जिनमें गन्धार एवं धैवत कोमल है। इसका जन्य राग 'कल्याण' है जो कि राग विबोध की तरह सम्पूर्ण है। इसका नादात्मक स्वरूप वही है जो 'राग मंजरी' में कल्याण मेल में दिया गया है।

इसके पश्चात् (द्वारिका के समीप) श्री कंठ कवि का 'रस कौमुदी' नामक ग्रंथ में कुल 9 मेल स्वीकार किये गये हैं जिसमें आठवां 'कल्याण मेल' है। पं0 चन्द्रशेखर

पंत के अनुसार तानसेन के द्वारा रचित दो ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं और सर्वसुलभ हैं।[7] 'संगीतसार' ग्रंथ तानसेन ने रीवां दरबार के समय लिखा था तथा 'रागमाला' ग्रंथ में कल्याण और ईमन इन दोनों नोमों का उल्लेख है।

मिलै जहाँ कल्याण को, केदारा समभाग।
सुरति बेलावल के मिले, होई ईमन सो राग
(तानसेन : रागमाला)

पं0 पन्त जी के अनुसार– कल्याण और ईमन में किसी भी मध्यकालीन ग्रंथकारों ने शुद्ध मध्यम का प्रयोग नहीं किया है। उनका मानना है कि 'यमन' अरब देश का एक प्रान्त है। 'यमन' का नामकरण वहीं से सम्बन्ध रखता है।

एक ओर जहाँ पंत जी सैद्धान्तिक पक्ष के वक्ता, प्रस्तोता और मार्गदर्शक थे वहीं दूसरी ओर उनका प्रयोगिक कार्य भी क्रियान्वित था। जहाँ शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय संगीत में पं0 चन्द्रशेखर पंत जी का पूर्ण अधिकार था, वहीं लोक संगीत को भी वे महत्वपूर्ण समझते थे। भारतीय संस्कृति की महान धरोहर शास्त्रीय कला के मूल्य को समझकर, उसे सहेजकर रखने तथा उसमें उचित संशोधन रके सामान्य वर्ग तक पहुँचाने का अथक प्रयास पं0 चन्द्रशेखर पन्त द्वारा किया गया है, जो कि आज अत्यन्त सराहनीय है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष यह है कि भिन्न–भिन्न ग्रंथों में भिन्न–भिन्न प्रमाण मिलते हैं। जिन संस्कृत ग्रंथों में कल्याण का उल्लेख है वे सभी सन् 1550 ई0 के पश्चात् ही लिखे गये हैं। उनमें पुण्डरीक विट्ठल द्वारा रचित 'रागमंजरी' ग्रंथ तथा श्रीकंठ कवि की 'रसतरंगिणी' सर्वप्रथम है। अगर इससे पहले कोई भारतीय ग्रंथ 'यमन' अथवा 'कल्याण' का उल्लेख करते हैं तो वह अमीर खुसरो के फारसी ग्रंथ हैं। यह यमन तथा कल्याण का मत सात सौ वर्षों का इतिहास है। प्रस्तुत शोध पत्र में स्व0 पं0 चन्द्रशेखर पन्त का प्रमाणिक जीवन वृत्त उल्लेख व पं0 चन्द्रशेखर पन्त द्वारा राग कल्याण के प्रकारों का ऐतिहासिक दृष्टि से गहनतापूर्वक अवलोकन किया गया है। प्रस्तुत लेख इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

सुझाव

संगीत जगत में पं0 चन्द्रशेखर पन्त का नाम विशिष्ट संगीत–विद्, ज्ञानी एवं कुशल रचनाकार के रूप में जाना जाता है। आपके द्वारा लिखे गये जो लेख एवं विलुप्त रचनायें कठिनता से प्रकाश में आयी हैं, इस शोध पत्र के माध्यम से जिज्ञासु विद्यार्थी, शोधकर्ता तथा संगीत जगत के विद्वतजन अवश्य ही लाभान्वित होंगे।

अंत टिप्पणी

1. *संगीत सुधा, डा0 पंकज उप्रेती, (2003) पृष्ठ सं0 104–109*
2. *संगीत कला विहार, गांधर्व महाविद्यालय, मंडल प्रकाशन बम्बई (1962) पृष्ठ सं0 5–15*
3. *संगीत रत्नाकर, पंडित शारंगदेव, मद्रास अड़्यार संस्करण, Vol II, श्लोक सं0 25–26*
4. *लोक संगीत : चन्द्रशेखर का दृष्टिकोण, पुरवासी (1998), डॉ0 निर्मल जोशी, शिरीष जोशी*
5. *संगीत सुदर्शन, पं0 सुदर्शनाचार्य, रागाध्याय (1914), पृष्ठ सं0 96–97*
6. *राग तरंगिणी, पंडित लोचन, राज प्रेस दरभंगा, पृष्ठ सं0 1211*
7. *कवि तानसेन और उनका काव्य, नमंदेश्वर चतुर्वेदी, साहित्यीवन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद (उ0प्र0)*